आरती बुधवार की

आरती युगल किशोर की कीजै,
तन मन धन न्योछावर कीजै ।
गौर श्याम मुख निरखत रीझै,
परि को स्वरूप नयन भर पीजै ।
रवि शीश कोटि बदन की शोभा,
ताहि निरख मेरा मन लोभा ।
ओढे नील पीत पट सारी,
कुंज बिहारी गिरवर धारी ।
फुलन की सेज फुलन की माला,
रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला।
मोर मुकुट मुरली कर सोहे,
नटवर कला देखि मन मोहे ।
कंचन थार कपूर की बाती,
हरि आये निर्मल भई छाती ।
श्री पुरूषोत्तम गिरवर धारी,
आरती करे सकल ब्रजनारी।
नन्द नन्दन वृषभानु किशोरी,
परमानन्द स्वामी अविचल जोरी ।

विवरण

हम अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पण कर युगल किशोर की आरती गाते हैं । राधा एवं श्याम के मुख को देखकर मन मोहित हो जाता है, इनके इस रूप को अपने नैनों में भर लेने को जी चाहता है । सूर्य एवं चन्द्रमा के समान इनके बदन की शोभा को देखकर हमारा मन लोभित हो जाता है ।

इनके साँवले बदन पर पीले रंग का वस्त्र शोभित हो रहा है । फूलों की

माला पहनकर तथा फूलों की सेज की तरह सजे हुए रत्न सिंहासन पर नन्दलाला बैठे हुए हैं । इनके मुकुट पर मोर तथा हाथों में बाँसुरी शोभा दे रही है, इनकी इस कला को देखकर हमारा मन मोहित हुआ जा रहा है ।

सभी सखियों का हृदय श्री नन्दलाला का आना देखकर हर्षित हुआ जाता है, सोने की थाल में कर्पूर की बाती जलाकर सभी ब्रज की औरतें इनकी आरती कर रहीं हैं । नन्द बाबा के नन्दन एवं वृषभानु की किशोरी राधा की युगल जोड़ी परम आनन्द को देने वाली है ।